हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने जम्मू क्षेत्र के किसानों के लिए 12 मार्च 2019 को कृषि विज्ञान केंद्र, कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में **औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती के कृषिकरण के दौरान अपनाई जाने वाली विभिन्न प्रथाओं** पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें जम्मू क्षेत्र के लगभग 50 किसानों ने भाग लिया।

डॉ. वी.पी. तिवारी, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का

शुभारम्भ किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, *भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद*, देहरादून, जो कि पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार की वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य कार्य कर रही एक प्रमुख संस्था है, के अंतर्गत कार्यरत नौ अनुसंधान संस्थानों में से एक संस्थान है । जैव विविधता मूल्यांकन और संरक्षण, कीट-रोग और रोग प्रबंधन,

निचले और मध्य पहाड़ियों में कृषि-वानिकी, वृक्षारोपण सुधार कार्यक्रम, औषधीय पौधों की खेती और ठंडे रेगिस्तानों में वानिकी अनुसंधान आदि के क्षेत्र में वानिकी अनुसंधान करने के साथ-साथ विस्तार गतिविधियों आदि के माध्यम से विभिन्न हितधारकों के लिए शोध निष्कर्षों का प्रचार व प्रसार भी करना भी संस्थान की एक मुख्य गतिविधि है । वानिकी अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों के संचालन हेतु हिमाचल प्रदेश और जम्मू और कश्मीर राज्य, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के अधिकार क्षेत्र में आते हैं । उन्होंने बताया कि परिषद् द्वारा अनुसंधान उपलब्धियों को अधिक प्रभावी बनाने तथा इन्हें प्रदर्शित करने, हितधारकों को प्रयोगशाला से भूमि तक प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित करने के लिए कृषि विज्ञान केंद्रों के सादृश्य पर वन विज्ञान केंद्रों की स्थापना की गई है । उन्होंने कहा कि *भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद* तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के मध्य एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया है, जिसके अनुसार कृषि विज्ञान केंद्र एवं वन विज्ञान केंद्र द्वारा आपस में सामंजस्य स्थापित कर कृषि तथा वानिकी के क्षेत्र में किए गए अनुसंधान कार्यों को एक साथ मिलकर हितधारकों तक पहुँचाने की सहमति बनी है। साथ ही किसानों को कृषि के साथ-साथ वानिकी को भी महत्त्व देने हेतु भी जागरूक किया जाएगा तथा किसानों के ज्ञानवर्धन हेतु समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा प्रदर्शन यात्राएं (एक्सपोज़र विजिट्स) भी करवाई जाएगी। इसी कड़ी कृषि विज्ञान केन्द्र, कठुआ के सहयोग से कठुआ में इस एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उन्होंने शेर-ए-कश्मीर विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू और कृषि विज्ञान केन्द्र, कठुआ के वैज्ञानिकों को इस प्रशिक्षण के आयोजन के लिए आवश्यक व्यवस्था करने के लिए धन्यवाद दिया और आशा व्यक्त की कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों को औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती के लिए प्रोत्साहित और प्रबुद्ध करेगा, जिसके परिणामस्वरूप किसानों की आय में वृद्धि हो सकती है।

डॉ. राजकुमार वर्मा, वैज्ञानिक-जी तथा प्रभाग प्रमुख, विस्तार, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने संस्थान की अनुसंधान उपलब्धियों तथा वर्तमान गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा बताया कि संस्थान का प्रयास रहता है कि अनुसंधान उपलब्धियों को हितधारकों तक पहुँचाया जाए।

डॉ. अमरीश वैद, प्रमुख वैज्ञानिक और कृषि विज्ञान केन्द्र, कठुआ ने कहा कि औषधीय पौधे वैश्विक महत्व के साथ स्थानीय धरोहर हैं एवं दुनिया औषधीय पौधों की समृद्ध संपदा से संपन्न है । जड़ी-बूटियाँ भारत में हमेशा से ही औषधि का प्रमुख स्रोत रही हैं और वर्तमान में वे विकसित दुनिया भर में लोकप्रिय हो रही हैं, क्योंकि लोग तनाव और प्रदूषण के कारण स्वस्थ रहने का प्रयास करते हैं और दवाओं के साथ बीमारी का इलाज करते हैं जो शरीर के साथ मिलकर काम करती हैं । परिणामस्वरूप, वनों से औषधीय पौधों का अंधाधुंध

संग्रहण हो रहा है, जिससे कई उच्च-मूल्य वाले औषधीय पौधों की प्रजातियों को खतरा पैदा हो गया है । अत: विलुप्त हो रही जंगली प्रजातियों को खेती के तहत लाने की आवश्यकता है । इस क्षेत्र को कृषि के अतिरिक्त किसानों को अतिरिक्त आय सृजन के स्रोत के रूप में भी देखा जा रहा है।

तकनीकी सत्र के दौरान, श्री चमन लाल शर्मा, मुख्य बागवानी अधिकारी, कठुआ ने जिला कठुआ में विभिन्न औषधीय और सुगंधित पौधों की संभावनाओं पर बात की। डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, ने महत्वपूर्ण औषधीय पौधों और आधुनिक पौधशाला तकनीक, कम्पोस्ट और वर्मी-कम्पोस्ट तैयार करने के बारे में अपनी प्रस्तुति दी। डॉ. पुनीत चौधरी कृषि विज्ञान केंद्र, जम्मू के वरिष्ठ वैज्ञानिक ने जम्मू संभाग में औषधीय वृक्षों की खेती पर अपनी बात रखी तथा डॉ. विशाल महाजन, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, कठुआ ने औषधीय और सुगंधित पौधों के व्यापार पर चर्चा की।

<table>
<tr><td> </td><td> </td></tr>
<tr><td>श्री चमन लाल शर्मा, मुख्य बागवानी अधिकारी</td><td>डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी</td></tr>
<tr><td> </td><td> </td></tr>
<tr><td>डॉ. पुनीत चौधरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक</td><td>डॉ. विशाल महाजन, वरिष्ठ वैज्ञानिक</td></tr>
</table>

अंत में, **श्री दिनेश पाल**, उप-अरण्यपाल, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने प्रतिभागियों को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में रुचि दिखाने के लिए धन्यवाद दिया । उन्होंने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की मदद करने और किसानों के साथ अपने अनुभव को साझा करने के लिए कठुआ के वैज्ञानिकों की टीम का भी धन्यवाद किया।

मीडिया कवरेज

कार्यक्रम में उपस्थित प्रगतिशील किसान एवं संबोधित करते अधिकारी। *(राजा)*

किसानों को दी औषधीय एवं सुगंधित पौधों की जानकारी

कठुआ, 12 मार्च (गुरप्रीत): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से मंगलवार को केंद्र में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती पर आयोजित इस शिविर में जम्मू क्षेत्र के लगभग 50 प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

केंद्र के प्रमुख डा. अमरीश वैद्य ने कहा कि औषधीय पौधे महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि इसके प्रति किसान जागरूक हों, इसी मकसद से समय-समय पर कार्यक्रमों का आयोजन कर किसानों को जागरूक किया जाता है। किसान आर्थिक विकास के लिए औषधीय और सुगंधित पौधों को उगाकर अपनी स्थिति को मजबूत कर सकते हैं। संस्थान के निदेशक डा. वी.पी. तिवारी ने कहा कि हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला, भारतीय वन अनुसंधान और शिक्षा परिषद देहरादून के 9 क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थानों में से एक महत्वपूर्ण संस्थान है। संस्थान और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में सहमति के साथ ही ऐसे आयोजन हो रहे हैं। इस मौके पर किसानों ने विभिन्न योजनाओं की जानकारी भी ली।

पंजाब केसरी ई-पेपर Wed, 13 March 2019
https://epaper.punjabkesari.in/c/37565192

Training on cultivation practices of medicinal, aromatic plants' organised

■ STATE TIMES NEWS

KATHUA: Himalayan Forest Research Institute, Shimla, in collaboration with KVK Kathua, organised a training programme on 'Cultivation Practices of Medicinal and Aromatic Plants' for the farmers of Jammu region on Tuesday at Krishi Vigyan Kendra, Kathua (J & K). About 50 progressive farmers of the Jammu region participated in the training programme.

Dr. Amrish Vaid, Chief Scientist and Head, KVK, Kathua said that medicinal plants are the local heritage with global importance, world is endowed with a rich wealth of medicinal plants. KVK, Kathua is continuously coordinating with the progressive farmers of Kathua District and encouraging them to grow medicinal and aromatic plants for their economic growth.

Dignitaries during the training programme at Kathua.

Cultivation of Medicinal plants, apart from horticulture crops, is also being seen as a source of additional income generation to the farmers in additional to the agriculture.

Dr. V.P. Tewari, Director, HFRI, Shimla Chief Guest of the inaugural session of the training programme, informed that Himalayan Forest Research Institute, Shimla is one of the nine regional research Institutes of Indian Council of Forestry Research & Education (ICFRE), Dehradun under the Ministry of Environment, Forests & Climate Change, Government of India.

During technical session, Dr. R.K. Verma, Scientist-G apprised the farmers regarding the activities undertaken by HFRI, Shimla in Himachal Pradesh as well as Jammu & Kashmir.

C.L. Sharma, Chief Horticulture Officer, Katua shares his experience on cultivation techniques of the medicinal and aromatic plants in and around Kathua District. Dr. Sandeep Sharma, Scientist-G, HFRI, Shimla gave a presentation on nursery techniques of important medicinal plants and modern nursery, compost and vermin-compost techniques. Dr. Punit Chaudhary, Senior Scientist, KVK, Jammu has given his talk on medicinal trees cultivation in Jammu division - a saga of success.

Dr. Vishal Mahajan, Scientist, KVK, Kathua discussed about the trade of medicinal and aromatic plants in the State of J & K. He also thanked the participants for showing interest in this training programme. He hoped that the collaboration between HFRI, Shimla and KVK, Kathua will further be strengthened in the future also.

औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती पर दिया जोर

अमर उजाला ब्यूरो

कठुआ। कृषि विज्ञान केंद्र कठुआ के सहयोग से हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती पर जोर दिया। कार्यक्रम में जम्मू क्षेत्र के लगभग 50 प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

इस दौरान केवीके के प्रमुख डॉ. अमरीश वैद ने कहा कि औषधीय पौधे वैश्विक महत्व के साथ स्थानीय विरासत हैं। दुनिया औषधीय पौधों की समृद्ध संपत्ति से संपन्न है। केवीके कठुआ लगातार कठुआ जिले के प्रगतिशील किसानों के साथ समन्वय बना रहा है और उन्हें आर्थिक विकास के लिए औषधीय और सुगंधित पौधों को उगाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। औषधीय पौधों की खेती कर किसान आय सृजन के स्रोत को बढ़ा सकते हैं।

वहीं संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने बताया कि हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला भारतीय वन अनुसंधान और शिक्षा परिषद देहरादून के नौ क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थानों में से एक है। उन्होंने कहा कि संस्थान और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में हुए एक समझौते के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों को औषद्यीय और सुगंधित पौधों की खेती के लिए प्रोत्साहित और प्रबुद्ध करेगा।